कृष्ण कथा में कृषक जीवन
(हिंदी उपन्यासों के विशेष संदर्भ में)

सुमन कर
शोधार्थी
हिंदी विभाग
तमिलनाडु केंद्रीय विश्वविद्यालय, तिरुवारुर
ईमेल – skar95149@gmail.com
संपर्क : 8260595142

सारांश

प्राचीन काल से ही भारत देश अपने ज्ञान, संस्कृति व परंपरा के लिए विश्व में प्रसिद्ध रहा है। इसको महान रूप प्रदान करने हेतु कई महामानवों का अवतरण भारत में हुआ। उनमें से श्रीकृष्ण का चरित्र सबसे अनोखा है। कृष्ण निष्काम कर्मयोगी, आदर्श दार्शनिक, स्थितप्रज्ञ और दैवीय संपदाओं से सज्जित महान पुरुष थे। कृष्ण का जीवन कुछ इस प्रकार का रहा है, कि वह भारतीय मंदिरों से लेकर समाज के साधारण लोक-जीवन तक परिव्याप्त है। प्रत्येक मनुष्य उनसे अपना संबंध बिठा पाता है। कृष्ण जीवन के केवल एक पक्ष के ही नहीं बल्कि समग्रता के प्रतीक हैं। कृष्ण चरित्र केवल लोक कथा, दंत कथा तक ही सीमित न रह कर वर्तमान समय के सामाजिक जीवन मूल्यों के प्रतीक के रूप में प्रतिष्ठित है। हिंदी के आधुनिक उपन्यासों में कृष्ण अलौकिक से अधिक सामाजिक प्रतीत होते हैं। आधुनिक समाज में श्रीकृष्ण से जुड़ी कथाओं में कृषक जीवन एवं ग्राम्य परिवेश से संबंधित प्रसंग आज भी प्रासंगिक जान पड़ते हैं।

बीज शब्द: हिंदी उपन्यास, कृष्ण-कथा, कृषक जीवन, कृषि संस्कृति, गाँव, गाय, गोपालन, अधिकार, एकता, सहयोग, स्त्रियाँ

प्रस्तावना

भारत गाँवों का देश है। कृषि कार्य अधिक-से-अधिक गाँव में ही होता है। अतः कृषक जीवन गाँव से ही जुड़ा हुआ होता है। गाय, ग्राम्य परिवेश, कृषक जीवन यह सभी एक-दूसरे से बँधे हुए हैं। दूध तथा खेती में सहायता के लिए ग्राम्यजन गाय का पालन-पोषण करते हैं। गाय केवल चारा के बदले मनुष्य को पोषणयुक्त दूध देती है। सभ्यता के आरंभ से ही मानव जाति के विकास में इस पशु की अहम भूमिका रही है। भारतीय सनातन संस्कृति में गायों को

अपने विशेष गुणों के कारण गौमाता के रूप में पूजनीय माना जाता है। भारतीय ग्राम्य जीवन शैली में गाय एक प्रधान अंग है, जिसके बिना कृषक जीवन एवं ग्राम्य वातावरण की सुंदरता में अधूरापन रह जाता है।

संध्याकालीन ग्रामीण परिवेश

रांगेय राघव अपने उपन्यास 'देवकी का बेटा' में चारागाह से लौट रहीं गायों के संध्याकालीन दृश्य और ग्रामीण कृषक जीवन को इस प्रकार से चित्रित करते हैं –

"गोधूली में लौटती हुई गायों के गले में लटकाई हुई घंटियाँ बजने लगीं। गोकुल के पक्के और कच्चे घरों पर अगरुधूम जलने लगा था और कहीं-कहीं से मंत्रोच्चारण की ध्वनि आ रही थी। ब्राह्मण संध्योपासना की क्रियाओं में लगे हुए थे। गोपों के घरों में गायों की सेवा और दुहने का काम हो रहा था। स्त्रियों के भारी चूड़े आपस में टकराकर शब्द कर उठते थे।

उस समय गले में बैजयंती माल डाले गायों के एक झुंड के पीछे कृष्ण और चित्रगंधा चले आ रहे थे। कृष्ण मदिर-मदिर बाँसुरी बजा रहा था।"[1]

प्रस्तुत संदर्भ के माध्यम से देखा जा सकता है कि कृषक जीवन में संध्या के समय ग्रामीण किन–किन कामों में व्यस्त हैं। साथ ही कृषि संस्कृति की एक मनोहर छवि हमारे सामने उभरकर आती है जिसमें गाय है, संध्या-आरती है, गायों के गले में घंटियों का बजना, गाय दुहना, गायों के झुंड आदि दृश्य हमारे सामने जीवंत रूप में उपस्थित हो जाते हैं।

कृषकों के अधिकार

आज के समय में सभी को दूध-दही तो चाहिए, परंतु गायों का पालन कोई नहीं करना चाहता। जिससे धीर-धीरे ग्राम्य जीवन से गायें दूर होती जा रही हैं। पहले जो मनुष्य की गायों के साथ आदान-प्रदान की रीत थी, जिसमें एक आपसी संतुलन था, आज वह रीत और गायें गाँवों से विलुप्त होती जा रही हैं। कृष्ण कथाओं में भी यह दृश्य दिखाई देता है कि तब भी एक विशेष वर्ग पशुओं के दुग्ध से ही मतलब रखता था न कि उनके खाने–पीने और रहने के इंतजाम से। नरेंद्र कोहली कृत 'वसुदेव' उपन्यास में लेखक ने गंगा और कृष्ण के संवाद के माध्यम से इसे दिखाया है –

"उसे पेट-भर मक्खन खिलाऊँगी तो हाट में क्या बेचूँगी; और राज पुरुषों को कर के रूप में क्या दूँगी।"

"राजपुरुषों को मक्खन देना पड़ता है? वे क्या तुम्हारी गैया को घास खिलाते हैं?" कृष्ण ने चकित हो कर पूछा।

"न घास खिलाते हैं, न चराने ले जाते हैं फिर भी मक्खन ही क्यों, दूध भी देना पड़ता है।" गंगा ने बताया ।

"दूध का क्या होता है मैया?" कान्हा मुस्कुराया।

"हम दूध नहीं देंगे तो कंस की रानियाँ नहाएँगी किसमें?"[2]

उपर्युक्त संवाद को दृष्टिगत रखते हुए हम आज का समय और कृष्ण कथा की तुलना कर सकते हैं। आज समाज में लोग गाय का दूध निकाल लेने के बाद उसको सड़क पर आवारा मरने के छोड़ देते हैं और वहीं कृष्ण कथा में भी कंस जो एक राजा था, उसने पशुओं का सारा भार आम जनता पर डाल दिया था। उसको केवल गाय के दूध से मतलब था, गाय के रहने-खाने के प्रबंध से नहीं। कृष्ण के बालमन में इस प्रश्न का उदय होना अति स्वाभाविक है, कि जब गायें हमारी, श्रम हमारा तो उनसे प्राप्त दूध पर हमारा अधिकार क्यों नहीं? देख सकते हैं कृष्ण बाल्यकाल से गाय से जुड़े दिखाई देते हैं और वह गाय को चराने भी ले जाते हैं। यदि सारा दूध कंस के यहाँ चला जाता है तो वह उसका विरोध भी करते दिखाई देते हैं क्योंकि वह एक किसान परिवार में पले बढ़े इसलिए उनको दुःख होता है कि क्यों उनके और उनके साथियों के हिस्से का दूध कंस के यहाँ चला जाता है। अतः यह कृषकों के अधिकार की समस्या को दर्शाता है जो आज भी कहीं-न-कहीं प्रासंगिक है।

एकता की भावना

गाँव के रहने वाले लोग अत्यंत मिलापी एवं सरल स्वभाव के होते हैं, जिनका एक-दूसरे के परिवार के साथ अच्छे संबंध होते हैं। सभी को साथ लेकर चलने का गुण ग्रामवासियों में प्रधान रूप से मिलता है। जो अधिक धन नहीं, स्नेह भाव से मिलजुल कर रहने को महत्त्व देते हैं। इस संदर्भ में श्रीकृष्ण सामाजिक एकता तथा प्रेम की भावना का प्रतिनिधित्व करते हैं। श्रीकृष्ण भिन्नता में नहीं एकता में विश्वास रखते हैं। अपनी मातृभूमि से बेहद प्रेम करते हैं, जहाँ उनका पालन-पोषण हुआ, जिस धूल में खेल कर वे बड़े हुए हैं। पूरे गाँव (गोकुल) को ही एक परिवार बताने वाले कृष्ण 'वसुधैव कुटुंबकम्' की वार्ता को सार्थक प्रतिपादित करते हैं। उनके हृदय में अपने गाँव तथा लोगों के प्रति इतना लगाव है कि वे सभी को अपने अंदर ही प्रेम से समेट लेना चाहते है। रांगेय राघव कृत 'देवकी का बेटा' उपन्यास में दिखाया गया है कि किस प्रकार कृष्ण अपनी कृषि संस्कृति को बचाते और समाज में भ्रातृत्व की भावना को बनाए रखना चाहते हैं, जो कृषि संस्कृति में एक महत्त्वपूर्ण स्थान रखती है। कृष्ण कहते हैं – "**कृष्ण ने गहरे स्वर से कहा, "भाभी! मुझे अलग-अलग होने की बात नहीं भाती। मैं तो सबको प्यार करता हूँ। ब्रज और गोकुल के कण-कण से मुझे प्यार है। मैं यहीं**

पला हूँ, यहीं बढ़ा हूँ। यही वह धूलि है जिसमें खेलकर मैं बड़ा हुआ हूँ। सारा गोकुल एक कुटुंब है। इसके वनों की छाया मुझे विभोर कर देती हैं। जी चाहता है, सबको मन के भीतर आत्मसात् कर लूँ।"[3]

इस प्रकार से देख सकते हैं कि कृष्ण अपने समाज और संस्कृति से कितने जुड़े हुए हैं। ग्रामीण कृषि संस्कृति में अक्सर अपनापन देखा जाता है। अंततः कृष्ण कृषि संस्कृति के मुखिया बनते हुए सभी ग्रामीणजन को यह संदेश देते हैं कि मातृभूमि माता होती है। उसके लिए हृदय में उचित प्रेम और सम्मान रखना चाहिए। एक-दूसरे के साथ स्नेह-सौहार्दपूर्ण भाव से रहने से जीवन तनाव-ग्रस्त नहीं होता है और एक माला के धागे में सभी गूँथे से रहते हैं। ग्राम्य जीवन शैली मनुष्य मात्र के लिए उपरोक्त संदेश देता है। आज के भौतिकतावादी समाज में जहाँ केवल मनुष्य व्यक्तिनिष्ठ होता जा रहा है, अपने स्वार्थ और स्वप्रेम के लिए कार्य करता है और अंत में निराशा से भरे जीवन की ओर बढ़ते हुए अकेलेपन एवं तनावग्रस्त जीवन को ही अपना लेने के लिए विवश होता है। वहीं ग्राम्य जीवनयापन शैली प्रेम के सूत्र एवं मानव मात्र में परस्पर एकता की भवना का संदेश देती है।

पारस्परिक सहयोगी भाव

आज ग्रामीण जीवन कई समस्याओं से जूझ रहा है। पानी, फसल, महामारी, अनेकता, असहयोग आदि से झुलसते हुए गाँव आज नगरीय जीवन के ग्रास बनते जा रहे हैं। ऐसे में आज कृष्ण बरबस याद आते हैं। कृष्ण कृषि और गाँव के हिमायती व्यक्ति हैं, वह जीवन की गुत्थियों को मुस्कुरा कर हल कर लेते हैं। वह सहयोग देना जानते हैं। ग्रामीण जीवन के परिवेश को दर्शाते हुए रांगेय राघव 'देवकी का बेटा' उपन्यास में कृषि और कृष्ण के बीच अद्भुत प्रेम को दिखलाते हैं। लेखक देवकी एवं वसुदेव के मध्य हो रहे संवाद के माध्यम से ग्रामीण जीवन और कृषि संस्कृति का चित्र प्रस्तुत करते हैं। वह लिखते हैं –**"आर्य! वह नवनिर्माण प्रारंभ हुआ। कृष्ण ने मिट्टी खोदी। राधा ढोने लगी। बलराम ने पत्थर जमाया। नंदगोप कुएँ से पानी खींचने लगा। माता यशोदा जल भरने लगी और देखते ही देखते व्रजग्राम जीवित होने लगा।"**[4]

इस प्रकार देख सकते हैं कि कृष्ण एवं गोकुलवासी किस प्रकार से एक दूसरे को सहयोग प्रदान कर रहे हैं। यह कृषि संस्कृति की ही विशेषता है, जिसमें परस्पर सहयोग की भावना आधार रूम में पाई जाती है।

कृषक स्त्रियों का आदर्श रूप

कृषि परिवार की स्त्रियाँ सदैव कर्मतत्पर रहती हैं। वे गृहस्थ काम तथा परिवारजन का ध्यान रखने के साथ ही परिवार को आर्थिक सुदृढ़ता प्रदान करने में भी पूर्ण सहयोग प्रदान करती हैं। अतः स्त्री प्रत्येक कार्य के लिए योग्य है, यह केवल आधुनिक विचार नहीं बल्कि प्राचीन समय से ही ग्रामीण महिलाओं के द्वारा प्रमाणित है। कृषि महिलाओं के जीवन को उपस्थापित करते हुए यशोदा एवं रोहिणी के संवाद के माध्यम से उपन्यासकार नरेंद्र कोहली अपने उपन्यास 'वसुदेव' में लिखते हैं – **"भाभी! हमारे यहाँ कोमल युवतियों से काम नहीं चलता। उनको स्वस्थ तो होना ही होगा। गाय को संभालना है। गोरस का काम करना है। दही बिलोना है। बोझ उठाना है। वन में जा कर लकड़ी काटनी है। छोटे–मोटे किसी वन्य पशु से पाला पड़ जाए तो उसका सामना भी करना है।"**[5]

इस विशेष संदर्भ में कृषक महिलाओं की दिनचर्या के साथ उनकी कर्मठ जीवन शैली, साहस, उत्सुकता एवं सक्रिय विचारशीलता से भरे चरित्र का चित्रण है। ये कृषकाएँ आज के समय में अपने आपको कमजोर मानते हुए जो स्त्रियाँ पराश्रित जीवन को अपना लेती हैं उनके लिए एक प्रेरणा स्रोत के रूप में दिखाई देती हैं।

निष्कर्ष

अतः उक्त शोध से सहज ही निष्कर्ष निकलता है कि हिंदी के उपन्यासकारों ने अपनी सूक्ष्म दृष्टि से कृष्ण एवं कृष्ण कथा को आधार बनाते हुए भारतीय कृषि एवं ग्रामीण जीवन के मनमोहक पहलुओं को उजागर किया है। वर्णित संदर्भों से यह ज्ञात होता है कि हिंदी के उपन्यासकारों ने कृष्ण के केवल पौराणिक चरित्र का वर्णन ही नहीं किया है बल्कि उसका आधुनिक जीवन मूल्य के साथ संबंध भी स्थापित किया है। उपन्यासों में कृषि संस्कृति की विशेषता के साथ कृषि से जुड़ी कई दुविधाओं के ऊपर भी अवलोकन किया गया है। इस प्रकार श्रीकृष्ण भारतीय समाज में कृषक संप्रदाय के लिए नायकत्व का भार संभालते हुए एक आदर्श चरित्र के रूप में उदाहरण प्रस्तुत करते हैं।

संदर्भ-सूची :

[1] 'देवकी का बेटा', रांगेय राघव, 2007, राजपाल प्रकाशन , पृ. सं. -1
[2] 'वसुदेव', नरेंद्र कोहली, 2018, पेंगुइन बुक्स इंडिया प्रकाशन, पृ. सं. -319
[3] 'देवकी का बेटा', रांगेय राघव,2007, राजपाल प्रकाशन, पृ. सं. -6
[4] 'देवकी का बेटा', रांगेय राघव, 2007, राजपाल प्रकाशन, पृ. सं. -110

[5] 'वसुदेव', नरेंद्र कोहली, 2018, पेंगुइन बुक्स इंडिया प्रकाशन, पृ .सं. -75